

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये एकानशततमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একোনশততমং দশকম্ ॥

ভগবন্মাহাঅ্যানুর্ণনম্

বিশ্বেগারীর্য়াণি কো রা কথযতু ধরণেঃ

কশ্চ রেণুন্নিমীতে

যসৈরাঙ্ঘ্রিযেণ ত্রিজগদভিমিতং

মোদতে পূর্ণসম্পৎ।

যোহসৌ ব্রিশ্রানি ধত্তে প্রিয়মিহ পরমং

ধাম তস্যাবিযাযাং

ৎরদ্ভক্তা যত্র মাদ্যন্ত্যমৃতরসমর -

ন্দস্য যত্র প্ররাহঃ ॥ 99.1 ॥

আদ্যাযাশেষকর্ত্রে প্রতিনিমিষনরী -

নায ভর্ত্রে ব্রিভূতে -

র্ভক্তাত্মা ব্রিষ্ণরে যঃ প্রদিশতি হরিরা -

দীনি যজ্ঞার্চনাদৌ।

কৃষ্ণাদ্যং জন্ম যো রা মহদিহ মহতো

বর্ণযেৎসোহযমের

প্রীতঃ পূর্ণো যশোভিস্কুরিতমভিসরেৎ

প্রাপ্যমন্তে পদং তে ॥ 99.2 ॥

হে স্তোতারঃ করীন্দ্রাস্তমিহ খলু যথা

চেতযধ্রে তথৈর

ব্যক্তং বেদস্য সারং প্রণুরত জননো -

পাতুলীলাকথাভিঃ।

जानन्तुश्चास्य नामान्याथिलसुखकरा -
नीति सक्तीर्तयध्रं
हे रिषेण कीर्तनादैद्यस्तुर खलु महत -
स्तुत्वोबोधं भजेयम् ॥ 99.3 ॥

रिषेणः कर्माणि सम्पश्यत मनसि सदा
यैः स धर्मानवध्ना -
द्यानीन्द्रस्यैष भृत्यः प्रियसख ईर च
र्यातनोः क्षेमकारी।
रीक्षन्ते योगसिद्धाः परपदमनिशं
यस्य सम्यक् प्रकाशं
रिप्रेन्द्रा जागरूकाः कृतबहनुतयो
यच्च निर्भासयन्ते ॥ 99.4 ॥

नो जातो जायमानोऽपि च समधिगत -
स्तुन्महिम्नोहरसानं
देर श्रेयांसि रिद्धान् प्रतिमुहुरपि ते
नाम शंसामि रिषेण।
तं वरां संस्तौमि नानारिधनुतिरचनै -
रस्य लोकत्रयस्या -
प्यूर्ध्वं रिद्राजमाने रिचितरसतिं
तत्र रैकुष्ठलोके ॥ 99.5 ॥

आपः सृष्ट्यादिजन्याः प्रथममथि रिभो
गर्भदेशे दधुस्तुं
यत्र वरयोर जीरा जलशयन हरे
सङ्गता ऐक्यापन्।
तस्याजस्य प्रभो ते रिनिहितमभरं

पद्ममेकं हि नाडौ
दिकपत्रं यं किलाहः कनकधरणिभृं
कर्णिकं लोकरूपम् ॥ 99.6 ॥

हे लोका रिषुःरेतद्भुरनमजनय -
उन्न जानीथ यूयं
युष्माकं ह्युत्तरस्यं किमपि तदपरं
रिदयते रिषुःरूपम्।
नीहारप्रथ्यायापरिबृतमनसो
मोहिता नामरूपैः
प्राणप्रीत्यैकतृष्णाश्चरथ मथपरा
हस्त नेच्छा मुकुन्दे ॥ 99.7 ॥

मूर्ध्नामङ्गां पदानां रहसि खलु सह -
आणि सम्पूर्य रिश्रं
तत्प्रोत्क्रम्यापि तिष्ठन् परिमितरिरे
आसि चित्तान्तरेहपि।
भूतं भव्यं च सरं परपुरुष भवान्
किञ्च देहेन्द्रियादि -
अरिष्टोऽप्युदगतैरादमृतसुखरसं
चानुभुञ्जेत् एरमेर ॥ 99.8 ॥

यत्तु त्रैलोक्यरूपं दधदपि च ततो
निर्गतो ननु शुद्ध -
अनात्मा रतसे एरं तर खलु महिमा
सोऽपि तवान् किमन्यं।
स्तोकस्ते भाग एराखिलभुरनतया
दृश्यते त्र्यंशकल्पं

भूयिष्ठं सान्द्रमोदात्मकमुपरि ततो
भाति तस्मै नमस्ते ॥ 99.9 ॥

अर्यक्तं ते स्वरूपं दुरधिगमतमं
तद्गु शुद्धैकसद्गुं
र्यक्तं चाप्येतदेर स्फुटममृतरसा -
श्लोधिकल्लोलतुल्यम्।
सरोरुंकृष्टामडीष्टां तदिह गुणरसे -
नैर चित्तं हरन्तीं
मूर्तिं ते संश्रयेहहं परनपुरपते
पाहि मां कृष्ण रोगां ॥ 99.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानशततमं दशकं समाप्तम् ॥